त्रिदिवसीय चित्रकार कार्यशाला

‘पद्मश्री विष्णुश्रीधर वाकणकर स्मृति राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला’

(20–22 नवम्बर, 2019)

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

एवं

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्राहालय, भोपाल

प्रागैतिहासिक शैलचित्र कला, जिसके माध्यम से आदिम मानव ने स्वयं द्वारा तथा अपने आस–पास घटित होने वाली घटनाओं व क्रियाकलापों को चित्रात्मक शैली में शैल गुहाओं की भित्तियों तथा शैलखंडों पर अंकित कर अपनी आने वाली संततियों के लिए एक स्वर्णिम इतिहास प्रस्तुत किया। यह शैलचित्र पूर्णतः अक्षर व शब्द रहित होते हुए भी आदिम समाज की विभिन्न झलकियों को दृश्यरूपेण हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं, यथा आखेट दृश्य, खाद्यसंग्रहण, पशुपालन, कृषि कार्य, मातृत्व भाव, नृत्य–वादन, निर्माण कार्य तथा ऐतिहासिक कालीन अश्वांकन, युद्ध दृश्य, लेख आदि। भारत में भीमबेटका पुरास्थल पर इन सभी विषयों पर अंकन दृष्टित होते है। भीमबेटका पुरास्थल की खोज भारतीय शैलचित्र कला के 'पितामह' पद्मश्री विष्णुश्रीधर वाकणकर जी ने वर्ष 1957 में किया था, जिसे यूनेस्को ने वर्ष 2003 में विश्वदाय पुरास्थल की सूची में स्थान प्रदान किया।

भीमबेटका पुरास्थल का विहंगम दृश्य

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली विभाग इन्ही अक्षर व शब्द रहित समाज की चित्रात्मक भाषा को तथ्यात्मक रूप से वस्तुनिष्ठता के साथ व्याख्यायित कर वर्तमान समाज के समक्ष प्रस्तुत करने में निरंतर प्रयासरत है। इसी कड़ी में पद्मश्री डॉ० विष्णु श्रीधर वाकणकर के शताब्दी वर्षोत्सव तथा इं० गाँ० रा० क० के० स्थापना व विश्व विरासत सप्ताह के अवसर पर आदि दृश्य विभाग, इं० गाँ० रा० क० के०, नई दिल्ली तथा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्राहालय, भोपाल के संयुक्त तत्त्वाधान तत्त्वाधान में एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला का आयोजन भीमबेटका पुरास्थल पर दिनाँक 20–22 नवम्बर, 2019 तक किया

गया। कार्यशाला का उद्घाटन भीमबेटका पुरास्थल पर 20 नवम्बर को हुआ जिसमें प्रसिद्ध चित्रकार श्री वासुदेव कामथ (ट्रस्ट सदस्य, इं० गाँ० रा० क० के०), डॉ० बी० एल० मल्ला (परियोजना निदेशक, आदि दृश्य), डॉ० दिलीप सिंह (संयुक्त निदेशक, इं० गाँ० रा० मा० सं०), पद्मश्री बाबा योगेंद्र जी (संस्थापक, संस्कार भारती), डॉ० नारायण व्यास (पूर्व अधीक्षण पुराविद्द, भोपाल) तथा देश के विभिन्न राज्यों से आमंत्रित 15 प्रसिद्ध चित्रकारों श्री सुनील डी० पुजारी, श्री शरद आर० तावड़े, श्री आचार्य अभिषेक(मुंबई); सुश्री संगीता विशाल गाड़ा, श्री नटवरलाल गोपालभाई टंडेल, श्री मेहुल जे० प्रजापति, श्री राजपूत ज्ञानेश्वर बी० (गुजरात); श्री लिंगराजु एम० एस०, श्री कांथराजा एन० (कर्नाटक); डॉ० सुनील कुमरा विश्वकर्मा, डॉ० सुनील कुमार सिंह कुशवाहा, श्री अमित कुमार (उत्तर प्रदेश); श्री लक्ष्मण प्रसाद (दिल्ली) तथा डॉ० नारायण व्यास (भोपाल) की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। सर्वप्रथम डॉ० मल्ला ने प्रागैतिहासिक शैलचित्रों के चित्रण के अभिप्राय तथा उनकी ऐतिहासिकता पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। श्री वासुदेव कामथ जी ने कार्यशाला में आमंत्रित चित्रकारों को भीमबेटका के शैलचित्रों को कैनवास/ड्राइंग पेपर पर प्रतिचित्र सम्बन्धी शैलीबद्ध निर्देश दिए। डॉ० नारायण व्यास जी ने डॉ० वाकणकर द्वारा भीमबेटका की खोज तथा शैलाश्रयों में चित्रित शैलचित्रों का व्याख्यात्मक वर्णन प्रस्तुत किया, साथ ही भीमबेटका में हुए पुरातात्त्विक उत्खनन के समय डॉ० वाकणकर जी के साथ स्वयं के कार्य करने के अनुभवों को भी बतलाए।

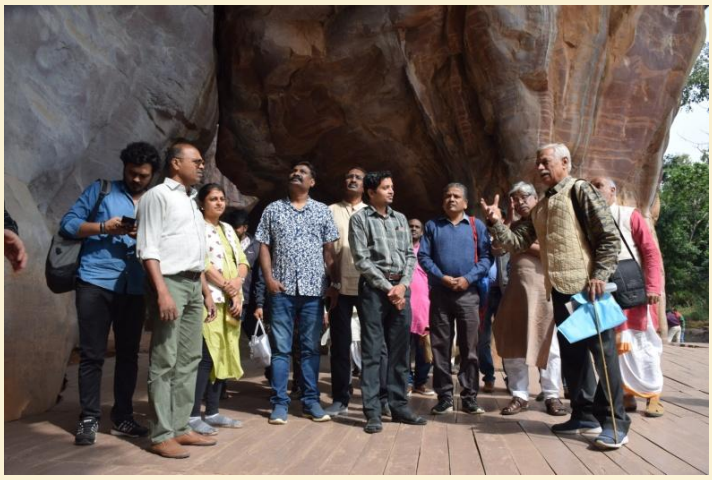

चित्रकारों को गाइड करते हुए डॉ० नारायण व्यास जी

अंततः श्री बाबा योगेंद्र जी ने वाकणकर जी से सम्बंधित कुछ स्मरणातीत उद्धरणों से सभी को अवगत कराया तथा आशिर्वचन के रूप में इस कार्यशाला के आयोजन हेतु दोनों संस्थाओं और आमंत्रित चित्रकारों को कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए धन्यवाद दिया, साथ ही भविष्य के लिए सुभाशीष दिए।

कार्यशाला में उपस्थित चित्रकारों ने अपनी–2 विशिष्ट शैलीनुसार कैनवास तथा ड्राइंग पेपर पर प्रागैतिहासिक पुराजीवनशैली को कल्पनाओं के माध्यम से जीनत रूप में चित्रित किया, इसके अतिरिक्त शैलाश्रयों में चित्रित विभिन्न विषयाधारित चित्रों को भी पेपर पर उतारा। कार्यशाला के सफलतपूर्वक समापन के पश्चात् 48 पेंटिंग्स चित्रकारों द्वार बनाई गयी, जिससे कार्यशाला का वास्तविक ध्येय भी पूर्ण हुआ चूँकि भविष्य में इन्ही चित्रों की चलायमान प्रदर्शनी के माध्यम से देश के अलग–2 क्षेत्रों के जन–मानस में भारतीय इतिहास, कला व संस्कृति की

प्राचीनता, वर्तमान समाज को पूर्वजों की की देन तथा पुराधारोहरों के प्रति जागरूकता फैलाने के नित्य नवीन विकासात्मक चरण का कार्य किया जा सकता है साथ ही डॉ० वाकणकर जैसे मनीषियों की प्राच्या भारतीय संस्कृति को क्या देन है उसे प्रेरणास्वरूप लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। यह वाकणकर जी के कार्यों का ही परिणाम है कि भीमबेटका भारत का एक मात्र प्रागैतिहासिक पुरास्थल है जिसे विश्वदाय पुरास्थलों की सूची में स्थान प्राप्त है।

शैलचित्र को कैनवास पर चित्रित करते हुए
श्री वासुदेव कामथ जी

चित्रकारों द्वारा शैलचित्र का चित्रांकन

शैलाश्रय का चित्रिण करते हुए
श्री कांथाराजा जी

चित्रिण करते हुए
सुश्री संगीता जी, श्री मेहुल जी एवं श्री नटवरलाल जी

चित्रांकन करते हुए
श्री सुनील कुशवाहा जी एवं श्री अमित जी

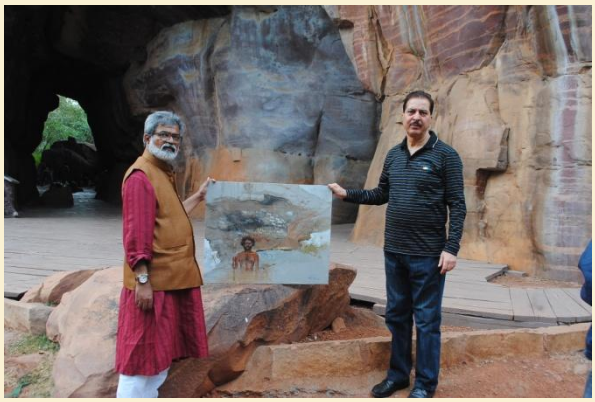

पुरास्थल पर श्री वासुदेव कामथ जी एवं
डॉ० बी० एल० मल्ला जी

आभार

इं० गाँ० रा० क० के० के सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानंद जोशी जी के प्रेरणास्वरूप तथा कार्यशाला के मुख्य संयोजक डॉ0 बंशी लाल मल्ला जी (परियोजना निदेशक, आदि दृश्य विभाग) के सफल मार्गदर्शन व आदि दृश्य विभाग के परियोजना सहायक, श्री प्रवीण कुमार सी0 के0, श्रीमती रीता रावत, सुश्री सुपर्णा डे एवं श्री प्रमोद कुमार आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास तथा स्थानीय सह–सहयोजक संस्था इं० गाँ० रा० मा० सं०, भोपाल के निदेशक प्रो० सरित के० चौधरी, डॉ० दिलीप सिंह (उप–निदेशक) एवं श्री सूर्य कुमार पाण्डेय जी के सहयोग के परिणामस्वरूप उक्त कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन संभव हो सका।

डॉ० दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

प्रेस विज्ञप्ति

रचनात्मक ज्ञान | भीमबेटका में तीन दिवसीय राष्ट्रीय चित्र कार्यशाला शुरू, चित्रकारों ने शैलचित्रों को ड्राइंगशीट पर अंकित किया

अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संचार की स्रोत है शैलकला

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

भारतीय शैल चित्रकला के पितामह, प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता तथा भीमबेटका के खोजकर्ता पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के शताब्दी वर्षोत्सव एवं विश्व विरासत सप्ताह के अवसर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्राहालय, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को त्रिदिवसीय राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला का शुभारंभ भीमबेटका में किया गया। इस कार्यशाला में शैलचित्र के जानकार वासुदेव कामत ने देश के विभिन्न राज्यों से आए 16 चित्रकारों को शैलचित्र को ड्राइंग शीट पर संरक्षित करने कि जानकारी दी एवं वयोवृद्ध संस्कृतिवेत्ता बाबा योगेंद्र ने कलाकारों से आग्रह किया कि वे भीमबेटका के पुराचित्रों को आम जनमानस में जागरूक करने का प्रयास करें। कार्यशाला में आगामी दो दिन तक रचनात्मक और व्याख्यात्मक गतिविधियां आयोजित होंगी।

भीमबेटका में शैलचित्रों को देखते कार्यशाला के लिए पहुंचे विशेषज्ञ और प्रतिनिधि। • वि.

मानव जाति के शुरुआती भाव

इस अवसर पर राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रोजेक्ट निदेशक बीएल मल्ला ने कहा कि शैलकला दुनिया के सबसे दुर्लभ सांस्कृतिक संसाधनों में से एक है, जिसमें मानव जाति के शुरुआती भावों को दर्शाया गया है। इस कला की निकटता आज दुनिया के कई जीवित समुदायों की कला के साथ इसकी आत्मीयता को और महत्वपूर्ण और मूल्यवान बनाती है। शैलकला छवियों को अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच सांस्कृतिक संचार के स्रोत के रूप में माना जा सकता है। मानव संग्रहालय के संयुक्तनिदेशक दिलीप सिंह ने कहा कि इन कलाकारों ने रॉक शेल्टर में रहने वाले लोगों के रोजमर्रा के जीवन दृश्यों-शिकार, खाना बनाना, खाना और पीना आदि को शामिल किया है। ये शैलचित्र उस समय के पूरे स्पेक्ट्रम का प्रतिनिधित्व करते हैं। कार्यशाला के दौरान डॉ. नारायण व्यास (पुरातत्वविद) ने भीमबेटिका शैलाश्रय कि जानकारी दी एवं स्वयं शैलचित्र को ड्राइंगशीट पर अंकित किया।

21/11/2019
नवदुनिया लाईव, भोपाल
पृष्ठ संख्या– 1

पत्रिका PLUS | CITYLIVE

सांची विश्वविद्यालय: राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह के तहत केंद्रीय लाइब्रेरी में हुईं प्रतियोगिताएं

पुराने शोध की मदद से मिल सकते हैं बेहतर परिणाम

पत्रिकाPLUS रिपोर्टर

भोपाल ◆ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में क्विज, भाषण प्रतियोगिता और कार्यशाला आयोजित की गई।

विश्वविद्यालय में केंद्रीय लाइब्रेरी द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में छात्रों ने हिस्सा लिया। क्विज प्रतियोगिता में छात्रों से मौखिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे गए थे, जिसमें एमएससी योग विभाग के प्रशांत खरे ने पहला पुरस्कार और समान अंक अर्जित कर हिंदी विभाग के शोधार्थी अनीश कुमार और बौद्ध अध्ययन विभाग के शोधार्थी अविनाश बर्मन दूसरा पुरस्कार जीता। तीसरा पुरस्कार वैदिक अध्ययन विभाग के शोधार्थी संदीप और भारतीय दर्शन विभाग के शोधार्थी विनय तिवारी ने संयुक्त रूप से जीता।

इंटरनेट से होती है समय की बचत

सप्ताह के दौरान 'इलेक्ट्रॉनिक साधनों का उपयोग कैसे किया जाए' विषयक भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने इंटरनेट, ई-जर्नल, वेबसाइट, ई-लाइब्रेरी के उपयोग से बचने पर बात रखी। साथ ही बताया कि कैसे पूर्व में किए गए शोध से आइडिया हासिल कर जारी शोध को बेहतर बनाया जा सकता है। इसमें बौद्ध अध्ययन विभाग के एमफिल शोधार्थी प्रकाश कुमार विजेता रहे। दूसरे स्थान पर शोधार्थी नेहा सैनी और मुस्कान सोलंकी रहीं।

डिजिटल लाइब्रेरी की जानकारी दी

कार्यशाला में सहायक ग्रंथपाल डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि किस प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक साधनों का अधिक से अधिक उपयोग कर अपनी शोध को सूचना और ज्ञान से भर सकते हैं। उन्होंने ऑनलाइन जर्नल, शोध गंगा, शोध गंगोत्री, आईआईटी खड़गपुर द्वारा संचालित की जा रही नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी के बारे में जानकारी दी। शोध में सहायक हो सकने वाले अधिकांश ई-जर्नल की वेबसाइट लिंक को सांची विवि के केंद्रीय लाइब्रेरी पोर्टल पर उपलब्ध कराया गया है।

21/11/2019
पत्रिका प्लस, भोपाल
पृष्ठ संख्या– 12

शैलचित्र को ड्राइंग शीट पर संरक्षित करने की दी जानकारी

तीन दिवसीय राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला शुरू

जागरण रिपोर्टर

भारतीय शैल चित्रकला के 'पितामह', प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता, कलाविद् तथा भीमबेटका के खोजकर्ता, पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के शताब्दी वर्षोत्सव एवं 'विश्व विरासत सप्ताह' के अवसर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली तथा मानव संग्राहालय के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को तीन दिवसीय राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला का शुभारंभ भीमबेटका में किया गया।

इस कार्यशाला में शैलचित्र के जानकार, वासुदेव कामत ने देश के विभिन्न राज्यों से आए 16 चित्रकारों को शैलचित्र को ड्राइंग शीट पर संरक्षित करने कि जानकारी दी एवं वयोवृद्ध संस्कृतिवेता बाबा योगेन्द्र ने कलाकारों से आग्रह किया कि वे भीमबेटका के पुराचित्रों को आम-जनमानस में पूर्वजों की धरोहर के प्रति जागरूक करने का प्रयास करें।

शैलकला दुनिया का सबसे दुर्लभ सांस्कृतिक संसाधन

इस अवसर पर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रोजेक्ट निदेशक बी.एल. मल्ला ने कहा कि शैलकला दुनिया के सबसे दुर्लभ सांस्कृतिक संसाधनों में से एक है, जिसमें मानव जाति के शुरुआती भावों को दर्शाया गया है। कार्यशाला के दौरान, डॉ. नारायण व्यास (पुरातत्वविद) ने भीमबैठका शैलाश्रय कि जानकारी दी एवं स्वयं शैलचित्र को ड्राइंग शीट पर अंकित किया। इस कार्यशाला में डॉ. कुशवाहा(पर्यावरणविद) एवं मानवशास्त्री उपस्थित थे।

21/11/2019
दैनिक जागरण
लेक सिटी, भोपाल
पृष्ठ संख्या– 1

भोपाल, गुरुवार, 21 नवंबर 2019 . 18

डॉइंगशीट पर उकेरे भीमबैठका के चित्र, बताया इनका इतिहास

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

भीमबैठका के खोजकर्ता पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के शताब्दी वर्षोत्सव और विश्व विरासत सप्ताह के तहत तीन दिवसीय राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला का आयोजन मानव संग्राहालय में किया गया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और मानव संग्राहालय के सहयोग से आयोजित इस कार्यशाला में शैलचित्र के जानकार वासुदेव कामत ने देश के विभिन्न राज्यों से आए 16 चित्रकारों को शैलचित्र को ड्राइंग शीट पर संरक्षित करने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वे भीमबैठका के पुरा चित्रों को आम-जनमानस में पूर्वजों की धरोहर के रूप में स्थापित करने का प्रयास करें। इस अवसर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रोजेक्ट निदेशक बीएल मल्ला ने कहा कि शैल कला दुनिया के सबसे दुर्लभ सांस्कृतिक संसाधनों में से एक है, जिसमें मानव जाति के शुरुआती भावों को दर्शाया गया है। वहीं कार्यशाला में मानव संग्रहालय के संयुक्त निदेशक दिलीप सिंह, पुरातत्वविद् डॉ. नारायण व्यास आदि उपस्थित थे।

विश्व विरासत सप्ताह के तहत मानव संग्रहालय में कार्यशाला

21/11/2019
दैनिक भास्कर
सिटी भास्कर, भोपाल
पृष्ठ संख्या–18

Artists recreate Bhimbetka magic

Aishwarya Shrivastav

TOI

Bhopal: Artists from different parts of the country recreated rock paintings at Bhimbetka on the occasion of 'World Heritage Week'.

IGRMS in collaboration with Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) organised a three-day workshop for conservation, interpretation, and tour guiding of rock art sites.

B L Malla, project director, IGNCA said, "Rock art can be treated as a source of cultural communication between the past, present and the future. Conservation for such world famous sites are integral in terms of history preservation."

Rock art is one of the richest cultural resources in the world, which depicts the earliest expressions of humankind. The proximity of this art and its affinity with the art of many living communities of the world today makes it all the more significant and valuable.

Expert Shri Vasudev Kamat discussed preservation of paintings. Artists requested participants to raise awareness about Bhimbetka's paintings to preserve the cultural heritage. Narayan Vyas Archaeologist gave information about Bhimbetka Rock Shelter by drawing the Rock painting on the drawing sheet. He said, "We tried to recreate themes displayed in these cave paintings such as animals, early evidence of dance and hunting."

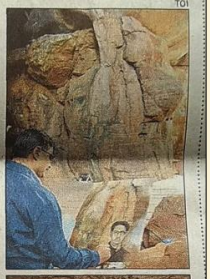

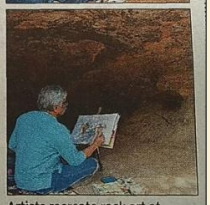

Artists recreate rock art at Bhimbetka on Friday

23/11/2019
टाइम्स ऑफ इण्डिया
सिटी टाइम्स, भोपाल
पृष्ठ संख्या– 2

ड्राइंग शीट पर सहेजे प्राचीन संस्कृति के संवाहक शैलचित्र

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्राहालय, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में 20 नवंबर से पद्मश्री पुरातत्ववेत्ता डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के शताब्दी वर्षोत्सव एवं विश्व विरासत सप्ताह के अवसर पर भीमबेटका पुरास्थल पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हो गया। इस कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों से आए 16 चित्रकारों ने यहां के शैलचित्रों को अपनी ड्राइंग शीट पर संरक्षित किया।

प्रोजेक्ट निदेशक डॉ. बीएल मल्ला ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि कार्यशाला के प्रयोजन का प्रमुख उद्देश्य देश की प्राचीनतम विरासत जो शैलचित्रों के रूप में प्राचीन मानव के समुदाय, समाज व संस्कृति तथा उससे संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों की संवाहक हैं।

भीमबेटका में राष्ट्रीय चित्रकार कार्यशाला का समापन

शैलचित्र को आकार देता चित्रकार। ● वि.

23/11/2019
नवदुनिया लाईव, भोपाल
पृष्ठ संख्या– 1